157
634 (P)
M
MICROFILM

891.431
V59R

63
14 DEC. 1931
DEPARTMENT
6984

ॐ

वन्देमातरम्

पहला भाग

# राष्ट्रीय आल्हा

पद्य

बाल हूँ पौरुष नहीं है क्या करूं लाचार हूँ।
कष्ट सहने के लिये मैं देश हित तैयार हूँ॥
यह देश मेरा हे प्रभो आजाद क्या होगा नहीं।
उद्योग करुंगा सर्वदा पीछे हटूं हर्गिज नहीं॥
यदि प्राण भी जावे हमारा देश भारत के लिये।
जन्म लूंगा दूसरा फिर योग साधन के लिये॥

---

लेखक—
राजबली वर्मा
जिला बलिया—रसड़ा
ग्राम (बरौली) भारतवर्ष

# निवेदन

उस सर्व-शक्तिमान जगदीश्वर को कोटिशः प्रणाम है जिसकी असीम कृपा से मुझे यह सुअवसर प्राप्त हुआ है कि अपने टूटे फूटे काव्य द्वारा अपनी मातृ-भूमि की कुछ सेवा करूं। इसमें कोयी सन्देह नहीं कि मैं कविता के एक अङ्ग का भी विज्ञ नहीं हू केवल तुक बन्दी द्वारा ही यह ढिठायी की है यह भी मेरी समझ में ठीक नहीं जंचता। मैं तो केवल उत्साह और भाव ही लेकर अपने देश वासियों के सम्मुख उपस्थित हुआ हूं और आशा करता हूं मेरी ढिठायी पर ध्यान न होते हुये जनता मुझे अपना किङ्कर समझ इस तुच्छ आल्हा को अपनाने की कृपा करेगी।

गुरु जी की असीम कृपा और अपने ग्राम के नगेन्द्र पुस्तकालय की सहायता से यह जानने लगा कि कांग्रेस क्या वस्तु है साथ ही मुझे देश-सेवा की लगन लग गयी। परन्तु घर के अकेले होने से मेरे कामों में बाधा होने लगी, उसी समय मुझे यह शौक हुआ कि वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में कुछ कविता कर देश-सेवा करूं। मैं सबल-सिंह चौहान का बनाया आल्हा बड़े प्रेम से पढ़ता था अतः मैंने यही तै किया कि आल्हा छन्द में ही कविता करू। जिसका प्रतिफल यह है कि अपने भाइयों के सामने यह आल्हा बना कर उपस्थित किया है मैं पहिले ही लिख चुका हूं कि मैं कोयी कवि नहीं हूं जो कुछ दास की त्रुटियां हों उसे सब भाई क्षमा प्रदान करेंगे। अन्त में जितने महानुभावों ने मुझे इसके छपाने में किसी प्रकार की सहायता की है सबका हृदय से स्वागत करता हूं।

प्रार्थी — रामबक्श सिंह

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 634
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

## सवैया

सूर सिंगार करै रण को, तब, नारि सिंगार पै ध्यान धरै ना ।
बात यही समरत्थन केरि कि, भावी टरै पर बान टरै ना ॥
देश व कोस विदेशन में, अब गाँधी सों बीर लखाय परै ना ।
जिनके समुहे पर हाकिम के, तलवाल व तोप भी काम करै ना

# आल्हा छन्द

## सुमिरनी

सुमिरन करूं मैं रामचन्द्र को, लै बजरंग बली का नांव ।
भारत माता तुमको सुमिरौं, जिनकी महिमा अपरम्पार ॥
जिनके चरण कमल वेदी पर, अगणित वीर लेय अवतार ।
फिर झांसी की रानी को बन्दौं, जाकर विजयलक्ष्मी नांव ।
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, जिन भारत हित प्राण गवाय ।
छत्रपति शिवा पद बन्दौं, औ प्रताप के चरण मनाय ॥
क्षत्रिय द्रौपै कुवर पद बन्दौं, नेहरू और लाजपति राय ।
तिलक, गोखले, देशबन्धु जी, वहवीर मदन यतीन्द्रलाल ॥
जो जो वीर देश हित चलि गयो, उनके चरण गिरौं दिनराति ।
भगत सिंह गुरुदत्त को सुमिरौं, सादर कर अम्बुज सिर नाय ॥
जो कि अपन हिय देशहित, है अब ही तक कारागार ।
फिर महेन्द्र प्रताप पद बन्दौं, जो भारत हित भयउ निकार ॥
फिर मैं बन्दौं कर्णधार को, जाकर तपो विराजत काय ॥

आकर सुमिरौं मधुसूदन को, गांधी आदि करें संहार ॥
जिसा बालक यह कांति कृपा दे, ऐसा जग जाहिर बलवान ॥
फिर मैं सुमिरौं मोति, जवाहर, तैयब और सरोजनी माय ॥
मदनमोहन, विट्ठल, अन्सारी जी राजेन्द्र वर्मा राघवा दास ॥
जो जो नेता हैं भारत में, उनके चरण गिरौं दिन राति ॥
फिर पद सुमिरौं अपने गुरु को, पण्डित नागेश्वर महराज ॥
जिनने अपने हिंद मुल्क हित, रहयो वर्ष दिन कारावास ॥
अस अस गुरु जो होत भारत में, तौ बनि जात देश का काम ॥
जिनके ज्ञान मूर्ति पद वन्दत, लिक्खा मैं यह काव्य बनाय ॥
बुद्धि हीन अज्ञान जानि मोहि, किन्हेउ कृपा गुरु महराज ॥
देश-भक्ति मोहिं मन्त्र सिखायेउ, कि या सम मन्त्र नहिं संसार
जल्दी करो काज भारत का, ऐसा समय न बारम्बार ॥
मोहिं मति मन्द मूर्ख बालक को, हियमें धधकि उठी यह ज्वाल
सब वीरों का ज्ञान शक्ति भर, मैं यह आल्हा लिया बनाय ॥
सब सज्जन के चरण कमल में, रख दोउ हाथ जोड़ हूं ठाढ़ ॥
यदि जो कछु भूल चूक यामें हो, क्षमिय देश-हितैषी जानि ॥
छोड़ सुमिरनी अब आगे कउ, सुनियो सज्जन कान लगाय ॥

## ॥ महात्मा गांधी का नमक गोदामपर धावा ॥

ऊइयाँ भुइयाँ सबको सुमिरे, देवी दुर्गा शीश नवाय ॥
वीर पुकारो मैं भारत हूं, शारद माता होहु सहाय ॥
जो जो बातें मैं भूलूंगो, सो सो अक्षर देहु बताय ॥
सदियाँ बीति गयीं भारत में, रहिय गुलामी सिर पर छाय ॥

ज्ञान-घटी सब गुप्त होइ गयो, छिन गयो अब औधरमी हथियार
भारत आस गुलामी करि लियो, जब होइ गयो अधर्मी राज ॥
एकओर महुया डिडियाती लगी, एकओर प्रजा रहेउ बिलखाय
कि सब सम्पति विलायत चलियो, हम भारतीका मोखविकाऊ
दुख की घटा घिरा भारत पर, रोवन लागिय हिंद की माय
कि हाय भारत पहले कैसा था, पर अब ऐसो हाल तो हाय
कि करत विदेशी राज्य यहां पर, नहिं कोई वीर रोकने वाला
रघु, दलीप कतहु नहिं देखौं, ना कहिं लड़के के पारथ जवान
हाय रघुनन्दन हाय यदुनन्दन कहां गइलै राम लषन दोउ भाय
हाय कन्हैया गोकुल वाला वंशी कहां बजावत आज
राज छीन गइलै तो भारत का, वंशा तोर बनै दासी आजु ।
एक तुम्हारे अब जियरा बिनु यह भारत होइ गयो बेहाल ॥
जेहि नारायण को आकर पालयो, वह अब कटे धराधर आजु ।
एक द्रोपदी के लज्जा हित, भारत रच्यो हिन्द में आय ॥
कितने दुखी भारत में, नित होते हाल बेहाल ।
कितने अब प्रहलाद हिंद में, नित उठ जोहत आस ॥
कितने जान की बाजी लगा गई, कितने सेन्दुर गहल सिराय ।
कितने डामल फांसी होइ गया, कितने जेहल में डिडिआय ॥
कितने देश निकाला होइ गया, कितने एक्क बिना मारे जाय
आजु के दिवसा कहां सोवत हो, भारत पति दीन दयाल ॥
देश बन्धु, प्रताप शिवाजी, नेत्रों तिलक लाजपति लाल ।
वीर गोखला कुंवर जतिन्द्र, दीतिय दोपै मदन धनवाल ॥
अब अब विरवा के हम जनमौली, परतुहि लेइ जेहल भगवान

इस लाल पुत्र को हाकिम लेइ लियो, जब जर्मन से रही मुकाम
शूरवीर जो था सो चल गयो, पर अब पड़ल हिजरवनसे काम
वालन्टियर की कौन चलावे, मेम्बर बनत मे थराये ॥
हुक्म बजावें जुल्म उठावें निसि दिन करत गुलामी आस ।
माछि मुड़ाइ के माँगि फाड़ि कै, फैशन करैं इण्डियन यार ॥
सब देसवा मिल ताना मारत, कि भल बनि गयलै हिन्दके लाल
मातु मातु कहि नेता रोवें, कि कह छिपि गइलू भारती माय ॥
कि मर गयलू कि चलि गइलू, कि हर लियो फिरंगी लाज ।
हमरे मुहवाँ मे करिखा लागल, अब केकरे पर होऊ दाद ॥
हे प्रभु स्वामी अन्तरयामी, तुम भारत के रक्षक हार ।
जब जब विपति पड़ी हम पर, तब तुम हरेहु निशाचर भार ॥
आजु के दिनवाँ कहवाँ सोवतड़ो जबदुख पड़िय दिला भकराल
एक तुम्हारी अब आसरा है, सब छोड़ि गइलीं आस हमार ॥
यह कह शोर चला नैनन से, मुँह भले गिरेउ तड़ाका खाय ।
तौलों शब्द भया ऊपर से, माता धीर धरो मन माहिं ॥
जन्म लिया रघुनन्दन ने, गांधी ओहि को संसार ।
जिनके हाँक सुनत जग काँपे, भय से विलायत हिल जाय ॥
वही तुम्हारी पीड़ा हरिहैं, दूसर नहिं वीर संसार ।
तौलों खुशाल भइ गाँधी कऊ, रोवति चली भारती माय ॥
जाय के सपनवा दिहलें आश्रम में, गांधी भल गयल घबराई ।
चाकोपड़ि गइलि तोरि अकिलपर, की बुद्धि हरयो फिरंगिलाल
कहा आस तुम्हपर राखत थे, कि दुख हरिहो लाल हमार ॥
दुख हरने हित भोर आये हो, पर क्यों सोय गयो अलसाय ।

एक बीर भइलन राम लषन दोऊ, चौदह वर्ष सहयो बनवास ॥
जिनकी खातिर बन बन घूमेयो, औ दुःख हरेयो हमारी प्राय ।
एक सुत रहलन कृष्णकन्हैया, सब दुःख हरेयो निशाचर मारि ॥
बहुदुख कइलन पछि भीम दोउ, औ हरिजिहलन विपतिहमार ।
तब कहि दिनवां हित सोवल हो, घोर नींद में चादर तान ॥
तिह तौर सोवल भारत में, भारत गइल बिराने हाथ ।
करत निकण्टक राज्य यहां वह, अधरम करत दिना अरु रात
विपतिडारि दियो यहिभारत पर, सबधन विलायत चलि जात
धन अरुधर्म धरणिसब हर लियो, सबसुत लियो गुलामबनाय
एक लाख सुत अन्न बिनु मरि गयो, कितने नमक २ चिल्लाय
कितने सुत की कुर्बानी भई, कितने फांसी जेहल जाय ।
कितने देश निकाला हो गया, कितने भयो पाथरी आजु ॥
७ कोटि नोमक कर लेहे, ३७ कोटि जमीन लगान ।
२५ कोटि गांजा अफीम में लै १० कोटि शराब दुकान ॥
दुख की घटा घिरी भारत पर सब नर जोहैं तुम्हारी आस ॥
भारत जो गारद होइ जइहन, तौ क्या खाक बटोरिहो लाख ।
आजु बांकुरा अकलि दिया से, अब दुख नींद पहुंची आय ॥
लोकल मान डाल नहीं बहादुर, नैरो नहीं गोखले राय ।
केकर बढ़िया तु अब जोहत हो, पै कलवेजा शेर जवान ॥
जेकरि नइया पर मेला जूझे, जोकरि हांवलके खवकार ।
चारो ओरियां सूना पड़ि गया, और आजु आजु पै लड़इताबाबा
मोकारि नइया मार डोरत है, ताको खेर लगइ हों पार ।
बड़ा आसरा है जियरा में, की हरि जाहैं विपति हमार ॥

कि कबहुँक समरथ लड़िका होइहैं, बन्धन कटि गुलामी क्यार
पर झूठ आस हमरी हो गइली, बेटा जान को धिक्कार।
जेकर लड़िका समरथ होइगयो, क्या दुख सहैं मातु दिनरात॥
लानति ऐसी जिन्दगानी को, ऐसो रहिबे को धिक्कार।
रूस, रूम, अफरीका, अमेरिका, आयरलैण्ड इरान जापान॥
सब देसवाकी मातु सुखी भइ, हमरि करमवामें आगिथलागि।
काल नहिं, रहयो यहि भारत में, बलु अब जहर खाइ मरिजाव॥
पुतना कहि के भारतमाता, रोवनि लागि हिरदा फाड़ि।
चौंक उठे गांधी निंदिया से हाथ जोड़ के बोलन लागि॥
कि धीरज धारु हिन्द की माता गया दिसम्बर सिर पर आय।
राज्य तोर सबही जोरदइहौं, हम छाती का दाह बुझाय॥
पीठि ठोकि कै माता चलि भइ युग युग जियो लड़ते लाल।
यहाँ की बाति को यहं छाड़िय, तनि गांधी कइ सुनिय हवाल॥
गोविन गोविन हांक लगावैं, गोविन सुन लो बात हमार।
यह चिट्ठी गोविन लै जाओ, औ इरविन को दिहो जाइ॥
लैके चिठो गोविन चलि भयो, पहुँचे तुरत लाट पहं जाइ।
फाड़ लिफाफे को खोला है, पढ़ने लग्यो लाट महराज॥
पहिले धन्यवाद गांधी दिन्ह कि धनि धनि भारत सरकार।
बड़ा भरोसा था जियरा में, कि होइ जरूर न्याय हमार॥
पर धक्का लागि गयो जियरामें, कि होइ गइल अधर्मी न्याय।
पेट की खातिर भारत जूझत, नित प्रति रोवत भारती ज्वान॥
जेहि राज में प्रजा दुखित है, है वह राजा को धिक्कार।
झूठ आस यह सब भारत की, अब गर्वन से धौं मुकाम॥

कलकत्ता के कांग्रेस में, कही थी औपनिवेशिक स्वराज्य ॥
और रद्द कर दियो लाहौर में, फिर तय किया जवाहरलाल ॥
कि होइ पास केरे भितर में, सुलहा जो चाहे सरकार ॥
हम तैयार हैं मिल भाव से, पर जो ना मानिहन बात हमार ॥
तो पुनि स्वतन्त्र मों करों भारत को, चाहे होइ लाखों बलिदान ॥
नहिं कछु खबर हो गौरमेण्ट ने, अन्तिम आजु सन्देशा आय ॥
कि नमक टिकट को बन्द करि देउ, कपड़ा नहिं विदेशी आय ॥
नहिं तो सत्याग्रह होइ जइहन, बढ़िहन राजविद्रोह दिन राति ॥
करि दियो बहु अनीत भारत पर, अब नहिं सहा जात तन माहिं ॥
बकरी भेड़ नहिं भारत है, नहिं है कभी गुलामी चाह ॥
हिन्द यश सबही हिन्दू है वंशज सभी प्रताप औ क्यार ॥
सबको खून खौलो गयो हिय में, देखि देखि आज न्याय अन्याय
अब तक नहिं स्वतन्त्र सब होइहन, नाहिं देहिके आग बुझाय ॥
नहिं तो कहना मोर मानहु अब भारत को देहु स्वराज्य ॥
इतनी पढ़ जो लाट बहादुर, बातें ये होइ मे को नाहिं ॥
तुम नहिं जानत गौरमेण्ट को, जिनसे भागि जर्मनी जाय ॥
अस कोइ पाठा ना दुनिया में, जो सरकार से करे मुकाम ॥
जा दिन कोपै फिरंगी लन्दन, सारो अकिल गुम होइ जाइ ॥
छाड़ि आसरा अब स्वराज्य का, गांधी बैठि रहो मन मारि ॥
इतनी लिख के लाट बहादुर, औ गोबिन को दीन्ह गहाय ॥
लै के पाती गोबिन चलि भयो, औ गांधी को दीन्ह गहाय ॥
गरज्यो वीर तबै आश्रम में, मानो आसमान घहराइ ॥
इन्द्र छीन लों इन्द्रासन से, भोला से छीनों कैलाश ॥

इस मूरत को कौन बचावै, जिनको लेंहु हाँक बिठाल ॥
असहयोग षड्यन्त्र रचो अस, कि भारत चहल पहल होइ जाय ॥
जन्मो हिन्द लाल भारत में, कि जैसे बीर भारती ज्वान ॥
जागो बहादुर भारत वाले, ऐ भारतके शेर जवान ॥
उठो उठो ऐ भारतवासी, अब तो पड़ी गयो नागिचाय ॥
जाही दिनको को जोहत थे, सोई समय पहुँचा आय ॥
पड़ो सामना गौरमेण्ट से, जिनकी जग जाहिर तलवार ॥
तिन संगै है संग्राम तमक कर, भइया जल्द होहु तैयार ॥
इन्द्र लड़ाई में तमक बनइहौं, करिहन जहाँ हाकिम तकरार ॥
नौकर चाकर नहिं कोई मेरो, सब जोग भइया लगो हमार ॥
ताते तुमको समझावत हूँ, भइया मानो बात हमार ॥
जिनको घर की तिरिया प्यारी, वह अब जाय जुल्हिनके द्वार ॥
जिनको प्यारी परम भगवती, वह तो चलै हमारे साथ ॥
दूध पिया सबही माता का, जो छाइन में गयो समाय ॥
इसी मात का लाज बहादुर, रखना आज भारती ज्वान ॥
सदियाँ बीत गई भारत में, रही गुलामी सिर पर छाय ॥
ताको दूर करो भइया सब, औ दुख हरो गोइन क्यार ॥
होकर पूत बत्तीस करोड़ हैं, क्या दुख सहै मातु दिनराति ॥
लानत ऐसी जिन्दगानी को, शेखी रहिबे को धिक्कार ॥
अरे । बहादुर केहि नींद सोवै, जल्दी हो जाओ तैयार ॥
प्राण हथेली पर सब धरि लेहु, घर के क्या मोह बिसराहु ॥
जो मरि जइहौं की जिति जइहौं, दो में एक बात होइ जाय ॥
मरि जइहौं तो स्वर्ग होइहन, औ जितिहौं तो लेउ स्वराज ॥

आजु दिनवा आखिरी है, भइया सोच लेहु मन माँहि ॥
एक दिन मरना है सबही को, चाहे आज मरो या काल्हि ॥
सात कोठरिया में नहिं बचब, जा दिन काल पहुँची आय ॥
मन की बात मने में रहिहन, सब छुटि जइहन भोग विलास ॥
ताते तुमको समझावत हूँ, भइया करो देश का काम ॥
गाँधी चलत आज भारत से, औ गढ़ दण्डी के मैदान ॥
गाँधी लौटन को नहि हैं, चाहे तन पड़िजा खड़िजा बहि जाय ॥
अस कहि बीर चला आश्रम से, जैसे शेर बने को जाय ॥
एक ललकार दई गाँधी ने, कि ऐ अलबेले शेर जवान ॥
सदा तुरइया ना बन फूलै, यारव सदा न जीवन होइ ॥
मानुष देहिया यह दुर्लभ है, पीरो जन्म न बारम्बार ॥
इतना कहि के गाँधी चलि भयो, दौड़े सबै भारती ज्वान ॥
सबको छोड़ दियो गाँधी जी, अस्सी ज्वान साथ में लाय ॥
कन्धे पर झण्डे सब लेकर, औ चलि भयो भारती ज्वान ॥
सबके तन पर खद्दर सोहै, ऊपर कैन लहर दिखलाय ॥
बन्दे मातु गाँधी जे बोलत, उड़ै ध्वजा मातरम प्यार ॥
जेहि जेहि रास्ते चलैं बहादुर, धरती दहल दहल रहि जाय ॥
बिगुल बजावत भाजा छकावत, होता गान मातरम प्यार ॥
पाँच मील पर खेमा गिरता, लेक्चर होत दिना अरु राति ॥
पाँचे दिनवा के बीतल पर, एक लाख होइ गयो तयार ॥
आगे आगे रघुनन्दन जी, पीछे झुण्ड वानरन प्यार ॥
ज्यों दल साजि चढ़यो लंका पर, खेमा गिरयो समुन्दर पास ॥
तैसे चलि भयो गाँधी बाबा, औ गढ़ दण्डी के मैदान ॥

कुछ दिनवाँ के चलवे में, चलि गयो डांडी के मैदान ।
वहवाँ की बतिया यहाँ पर छोड़ो, तनि आगे के सुनो हवाल ॥
साँझ समइया की बेरिया भइ, लेने लगे सूर्य्य विश्राम ।
खेमा गिरि गयो सब वीरन कऽ, सब सोइगयो भारतो ग्वाल ॥
नींद आइ गयो तब गाँधी को, तैयव मन में सोचन लागि ॥
जिनेकर आशिषा हिंद माताको जेहिमुह जोहेला आज संसार
जिनको देहियाँ में ठठरी झूलै, गोर अंगुरिन में फरुलि बेवाइ ॥
साठ वर्ष दिन झगड़ै में बीतल, नहिं एकु दिनवाँ लियो विश्राम
नहिं सगवा में बाड़ि पलटन सेना, नहिं है हाथ एक हथियार ॥
पड़ल सामना बादशाह से, जेहि पर बम तोप फहराइ ।
तिनसे रारि कियो गाँधी यह, जेहि से भाग जम लौ जाय ॥
दूबरि देहिया मोर गाँधी कऽ, कैसे सहे तोप को मारि ।
लड़ते लड़त सत्याग्रह में, एक दिन होई जइहन बलिदान ॥
छाई अंधेरिया छाइ भारत पर, हिंद को हिया गुज होइ जाइ ।
नाम डूब जइहन भारत का, रोइ मरि जइहन भारती माय ॥
हाय रघुनन्दन हाय यदुनन्दन, हाय भारत पति दीन दयाल ।
जब जब विपति पड़ा भारत पर, आकर गहयो हिन्द की लाज
आज के दिनवा कहाँ सोवल हौ, जब भारत की पड़ी पुकार ।
सत्याग्रह के विजय क्षेत्र में, गाँधी करे तोहार आस ।
झाँझरि नइया हिन्द की डोले, गाँधी एक खेवने वाल ॥
चाहे बोरो बीच धारवा में, चाहे खेइ लगाओ पार ।
सत्याग्रह की विजय क्षेत्र में, गाँधी करे तुम्हारी आस ।
आजु के दिनवाँ कहाँ सोवल हौ, जब गाँधी की पड़ी पुकारि

गांधी नहिं तो भारत म हिं, फिर क्या ख़ाक बटोरियो आय ।
जाकी गिरजा यही भारत पर, लागि आगि सलाम हो जाइ ॥
बड़े बड़ लाल जाहिं हित जुझि गये, चलेगये प्रान नेतवनभार
जिनने लीडर जेलखाना गयो, कालिन्दियर होत बलिदान ॥
जाकिते जियरी हित गांधी कउ, घेरत धाय आज संसार ।
बत्तिस कोटि भइया भारत के, घोर निंदियामें सोअत धाय ॥
हाय रे भारतियो भारत हित, जो मरि जइहन गांधी महराज ।
फिर न भेटे होइहन गांधी से, जानहु सत्य भारती ज्वान ॥
यहि सोच सोच तड़पत कलपत भे, तौलोंजागयो गांधीमहराज ।
गांधी बोले तब तड़पत से, कि क्यों करत सोच विरथा मननाहिं
हाथ जोडि के तड़पत बोले, कि नहिं है हाथएक हथियार ।
कैसे विजय हो दुश्मन से, नहिं होता मोहि विश्वास ॥
तब गांधी समुझावन लाग्यो, कि भइया करो राम का आस ।
धीरज शांति सत्य तरि धरियो, मन मेंलिजियो आसरा ठानि ॥
हिंसा मत करियो हाथ से, दुश्मन को सिर देहु नवाइ ।
जिहल भरदो सब दुश्मन का, सिर फांसी पर देउ चढ़ाय ।
तोप बन्दूकन के सन्मुहें पर, छतिया नीचे देउ नवाइ ॥
सत्याग्रह के समर क्षेत्र में, डटते रहो भारती ज्वान ।
राम बनावे सो बनि आवे, बिगड़ी बनत २ बनि जाय ॥
तोपर बन्ना भारतवर्ष का, जाकर विजय होइ संसार ।
युधिष्ठिर प्रह्लाद विभीषण, संकट सह्यो निशाचर क्वार ॥
निश्चिल जानि ताहि भगवत जो, दिन्हयो राज हरयो दुख भार
तिनको याद संकल्प करि देउ मन में विजय आसरा ठानि ॥

काम कमाई लो भइया सब, अइहन समय न बारम्बार ।
माथ हथेली पर सब धर लेहु, धन के मया मोह बिसराय ॥
एक दिन मरना है दुनियां में, चाहे मरो आजि या कालि ।
सात कोठरिया में नहिं बचब, जा दिन कालि पहुँची आय
मन की बात मने में रहिहन, भइया अन्त बाद पछताय ।
धन सम्पति कोई साथ जात नहिं केवल धर्म साथ है भाय ॥
खटिया पर सोवत मारे जइब, तो हरो घास गिद्ध न खाय ।
जो मरि जइब समर खेत में, होइहन युगन युगन लौं नाम ॥
ताते तुमको समझावत हूँ, भइयन चलो हमारे साथ ।
माथ हथेली पर सब धर लेउ, भइयन करो देश का काम ॥
दूध पिया सबही माता का, सोहाइन में गयी समाय ।
उसी माता पर विपत्ति पड़ी है, अब तुम हरो भारती त्रास ।
चलो चलो भइया आगे को, अब बातिन की बेरिया नाहिं ॥
गांधी जीवन को नाहिं है, चाहे तन धजि धजि उड़ि जाय ।
या तो जितिहौ या मारे जइहौ, दोनों बात एक होइजाय ।
अस कहि गांधी उठ चलते भयो, लश्कर रहि फरहरा खाई ॥
अबलौं तबलौं के चलवे में, जो धूरे पर पड़ी मुकाम ।
लौलौं पहुँची भयो दांडी में, देखत लहर समुन्दर कयार ।
इस वार्ता को रहने दो, लनि इरविन का सुनो हवाल ॥
जान्यो इरविन को यह जानयो, पहुँचलजी गांधी कछार ।
मन में सोचे लाट बहादुर, बेरा दूर लगावे पार ॥
अब भयो हिन्द अलग लण्डन से, भारत जाग गयो यहि काल
सोच समुझि मन में विस्मय भयो, मलत रहे अंगुरिया चापि

हुक्म देखवायो गांधी महं, कि सब नून जप्त होइ करवाई।
पल्टन पहुँची जब गांधी पहं, देखत भोर भइ होइ आई॥
धरयो धीर तबै सड़कों पर, बीरो सावधान होइ जाऊ।
होन परीक्षा यह आया है, मन बढ़ि गयो आज सरकार॥
घर घर नमक बनाओ भइया, देखैं क्या करता है सरकार।
हुक्म दे के गांधी बाबा, अपने नून बटोरन लागि॥
ज्यों पर्वत से टिड्डी झोंकें, बादल लाल बरन होइ जाय।
तैसे झोंकइ भारत वाले, हाथ तिरंगा फहराय॥
सुमिरन करके नारायन को, भारत माता को सिर नाय।
कांछा कसि लियो सब बीरन ने सब ही नून बटोरने लागि
इत धारता को रहने होइ तनी आगे का सुनो हवाल।
गांधी हुक्म होत भारत में, लाग्यो सभी भारत उठान॥
कलकत्ता मद्रास बम्बई, बम्मा औ बंगाल बिहार।
मध्यदेश संयुक्तप्रदेश पंजाबै और राजपुताना॥
सिन्ध सिन्धु को कौन चलावे, घर घर नून बनै आसाम।
शहर गांव सब कस्बन में, चूल्हा दगे नून दिन राति॥
कहीं पर डिप्टी सुपरिन्टेन्ड जी, कहीं थानेदार घूमे कोतवाल।
गलियन गलियन घूमै सिपाही, औ लेइ जात कराही उठाय
रुपया मलि मलि सेता कलपै, जैसे लंका में हनुमान।
कि आजु गांधी नहिं आज्ञा देहलन, नहिं तो कुछ करती मनुआय
कागज रन्ट दिखा पुलिस तब, औ लेइ जाय जेल के द्वार।
सब सेना मिलि प्रभु कहं सुमिरै, कि हे प्रभु पेसन प्यास तोहार
प्रह्लादहिं गजराज विभीषण, रक्षा करेउ शरण निज जानि।

दूसरो वैरियौं अब सोवत हौ, तोहरो जोबन को धिक्कार ॥
आधी वैजयियौं बिनु बांधत है, पर तुम देखत दीनदयाल ॥
यह सब सोचि सोचि नेता कलपै, तनिभागे कई हुनों हवाल ॥
गांधी जब गरज्यो दयडी में, जागल सात लाख जों गांव ॥
एक ओर घूमै मोती जवाहिर, एक ओर तय्यब जी सरदार ॥
वल्लभ विट्ठल दोनों भइया, सेन गुप्त अरु वीर सुभाष ॥
मालवी नारी मैन बहादुर, आलम, सत्यपाल, सरदार ॥
शिवप्रसाद, टण्डन, राघवजी, राजेन्द्र और सरोजिनी माय ॥
शेरवानी, अब्दुल कलाम जी, डाक्टर अन्सारी महराज ॥ ॥
कहं के वीर नहां उठी गइलन, दै ललकार दिना अरु रात ॥
कि खबरदार रहियो वीरो सब, नाहीं धरो पिछाड़ू पांव ॥
अब की बरनी है स्वराज्य की, यारव घड़ी गइल नगिचाय ॥
धीरज बांधी सबूरी बांधो, ताने छाती में राखो प्रान ॥
भाग जगा था तनो भारत का, वीरो समय परीक्षा क्यार ॥
कठिन सामना अंगरेजों का, पीछे भगा जर्मनी जानि ॥
तिनसे रारी कियो भैयिया सब, अब ना धरो पिछाड़ू पांव ॥
जागु जागु भैयिया रे भारतवासी, मेरे प्यारे राजदुलार ॥
लेहल मार देहु सब दुश्मन का, सिर फांसी पर देहु नवाय ॥
भारतमाता खून की प्यासी, तिनका उदर भरो यहि काल ॥
राम बनावें सो बनि जावै, बिगड़ो बनत बनत बनि जाय ॥
कादर पक्षा नारायण का, याकर विजय होय संसार ॥
अब तक हो निश्चिंत सोये थे, पर अब जगो भारती ज्वाल ॥
हिंदे जगने का संदेश सुनि, वीरो जाग उठा आपान ॥

यह अफगानी चोर जगा है, जागा अरब जगा ईरान।
तुम तो सोये घोर नींद में, मेरे वीर भारती जवान।
लानत ऐसी जिन्दगानी को, भारत में रहिबे को धिक्कार।
कि गांधी असल वीर आजु भारत का, जूझन जाय हिन्द के काज।
जिन के भइया बत्तीस कोटि हैं, वे क्या लड़ै अकेला आज।
गर्भ न गिरि गया तोरे जिरन कउ, नाहक जनम दिया भगवान
कि बनिया होइ के रण में जूझत, हो छत्री घर बैठल जाय।
हाय रे भारतियो भारत वाले, तनिको न रहियामें लज्जिया जाय
वीर बांकुरा तुम सोओ ना, अइहन समय न बारम्बार।
मानुष देहिया बड़ दुर्लभ है, बोरो जन्म न बारम्बार।
चारो दिनवाके सब साथी है, धन अरु मित्र पुत्र परिवार।
एक दिन मरना है दुनिया में, चाहे मरो आजु या काल्ह।
सात कोठरिया में ना बचब, जा दिन काल पहुँचो आय।
मन की बात मन में रहि जइहैं, भइया अन्त होइ पछताइ।
खटिया पर सोवत मरि जइब, तोहे मास गिद्ध ना खाय।
जो मर जइबा सत्याग्रह में, होइहैं सुगम सुगम सों मोद।
नौकर चाकर नहिं कोई मेरो, सब लोग भाइया लगो हमार।
देश कार्य करना सबही को, केवल कार्य हमारा नाहिं।
तासे सबको समुझावत हूँ, भाइन भाभी भाल हमार।
कुंवर सिंह के जे देश बन्धु जो, वह करतार हरकिशन राय।
वीर यतीन्द्र प्रताप, शिवा जी, गैरी, मदन लाजपति लाल।
ऐसे अस वीर देश की खातिर, अपने करि गयेलन बलिदान
जिनका नाम आज दुनिया में, चहुंदी रहत दिवा अरु राति।

आजु दिना भारत की खातिर, कितने कष्ट सहें हिन्द के लाल ।
कितने को डाबल भेज्यो दफ़िम, कितने सड़त जेल दिन रात ।
कितने देश निकाला होय गये, कितने फाँसी पर चढ़ि जात ।
कितने को बाँधत गौरमेण्ट नित, जो जेहल में गलत जाय ।
सब ही त्रास करत भारत पर, अब जागो भारती ज्वान ।
तब ही शान्त होय जियरा मोर, औ छाती के दाह बुझाय ।
हिल मिल सबै आज भैया मोर, लड़ना चाहु भाइयन प्यार ।
सब दुनिया ताहकी मुह जोहत, कि अब का करें हिन्द के लाल ।
तिस पर नहिं लड़ना आतो है, नहिं कुछ मुख पार्थ के हाल ।
धीर धाँकुर हो साबल हो, धिक है तुम्हें भारती ज्वान ।
अरे बहादुर तुम सोओ ना, अब सोवन की बारिया नाहि ।
यह सब कहि कहि नेता घूमें, तब गांधी कहु सुनिय हवाल ।
ढपि गांधी गयो दाण्डी में, है ललकार भारतीय भाय ।
नमक बटोरन लग्यो बार सब, जब गांधी हुक्म दिया फर्माय ।
कि घर घर नमक बनाओ भायग्रा, नमक कानून देउ उड़ाय ।
सोवत बार जगा भारत कर, हुवा कान कान आवि जाय ।
गौरमेण्ट जाना अपने मन, की भारत जाग गयो यहि काल ।
राज सौर अब ही काल जायहम, गांधी तेज बढ़त दिन राति ।
ताते कैद करौं गांधी का, असहयोग अबहीं मिटि जाय ।
सोचि समुझिके लार्ड बहादुर, तुरतहि हुक्म दिया फर्माय ।
कि पकड़हु आज गांधी को सब, बढ़त राजद्रोह दिन राति ।
जा बांधि लाय ले गांधी बाबा, असहयोग सब बन्द होजाय ।
सुनि कहि तब आगे कह, अब गांधी कहु सुनिय हवाल ।

यों ही लात दी सत्याग्रह पर, हर्षित भया भारती उद्यान ।
लै के तिरंगा विजय सैन में, कूदन लग्यो वीर मर्दान ॥
पहले विजय किन्ह नमक जंग पर, दूसर जेल लग्या मैदान ।
क्योंकि चक्र गिरा भगवत का, चाकि गिरयो हिन्द पर आय ॥
कोई आंधियरिया गयल भारत पर, उजल चाँद लुप्त होय जाय
फूट गया नशीबा भोगभारत कउ औ होगइलन सलाम सरकार
लाट हुकुम हाकिम सुपरिटेंडेंट जो, साथे थानेदार कोतवाल ।
पुलिस औ संग गारद लै के, सब हथियार सम्हलाय ॥
मानो कोई बादशाह के पकड़न हेतु चले सरकार ।
हफ्ता मंगला था दिन रहली, जब जर्मन से पहुंच मुकाम ॥
विजय फतह पर अब कइ लीन्हा, औ लगाइन दान्ह मुकाम ।
आखिर गुरु भइ गौरमेंट कउ, और मरन भरोसा आइ ॥
तब आ विनय कियो गांधी से, की जल्दी मदद देउ महराज ।
कातर का जा जर्मन जीतो, तो भारत को देऊ स्वराज ॥
सौंपे साथे गांधी कृतचिन्तु दश लाख सैन भारती जवान ।
विजय दिला दिया गौरमेंट का, औ सब चढ़ि गइलन बलिदान
ताके बदला में हाकिम पर, देता हमको आजु स्वराज ।
धन्य तू न्यायी गौरमेंट हो, धनि तोरि न्याय बस सरकार ॥
किन्हेहि गांधीजे जवाहर बांध गयो, जिनको ठूसत जेलमें आजु
एक महात्मा के पकड़न हित, धावा करेयो बिना कछु राति ।
आधी राति केरि समया मे, आकर घेर लियो सरकार ।
सोये पलंगिया पर गांधी मोर, बिजली बत्ती पड़ो दिखाइ ।
नींद टूटि गया तब गांधी कउ, उठि के बैठि गयो महराज ।

हंसि के गांधी बोलन लागे, कि कोहे दिल कियो परिश्रम आज॥
ऐंड दिखा दियो सुपरिटेन्डन्टजी, और रुख हाथ जोड़े रहिजाय
कि असहयोग उठल भारत में, औ सत्याग्रह का मैदान।
बढ़ता राजद्रोह भारत में यह सब काम बदौलत जानि॥
दुश्मन जान्यो गौरमेंट तोहि, जेहल हुक्म दिया है आज।
हो जस मर्जी वैसी करिहौ, यह सुनि उठे गांधी महराज॥
सब का कहायो गांधी जी, मनमें खुशी अपारी छाय।
जस जस मर्जी बादशाह की, तैसे हम करने को तैयार॥
दांत मांज करि नित्य क्रिया कर, कुछ साथियन को लीन बुलाय
कागज पत्र दिया अपना सब, सबहीं को समुझावन लागि॥
कि मैं भार तुम्हारे सर पर, रखना लाज भारती ज्वान।
देश कार्य करना सबही कों, केवल कार्य हमारा नाहिं॥
जब तक प्राण रहे देहिन में, हटिहौ नहिं लड़इते लाल।
जो प्रतिज्ञा कियो आश्रम पर, भुलहौ मत शेर ज्वान॥
पैर पिछाड़ू ना कोई धरिहौ, चाहे तन धज्जी धज्जि उड़ि जाय
अब की बेरियां जो चूकि जइहौ, सौ माटी को मोल बिकाउ॥
करत तयारी गांधी लाग्यो, पहुँची मोटर तबतक द्वार।
चरन पकरि लिहो सब गांधी कइ, औ सबहाथ जोड़ि रहिजाय
कि बाबा तोरे जियरा के खातिर, तजि दियो माई बाप परिवार
बैर हो गयो बादशाह से, पर नहिं भइल देश का काम॥
कवन कसूर भइया हमनन से, कि अस निठुर भयो तुम नाथ।
भारत की नैया छोड़ धारा में, क्यों तू भूलल जाति महराज
तब गांधी समुझावन लाग्यो, कि भयन सुन लो बात हमार।

देश के खातिर योगी हो गयो, तजि दियो मणि माल असबाब
बैरी हो गया बादशाह का, कारावास दिया रिसियाय ॥
जौन बेरि कृष्ण बजायो, हो गये अमर यतीन्द्र लाल ।
जेहि बीर से तुम सब डरते, औ भय करे भारती ज्वाल ॥
तेहि को आज शुरू जो करिहौ, तब होय जाय देश का काम ।
बहुत खुशी बाटिय जियरा में, पर दुख यही होत मनमाहिं ।
कि काज अधूरे में छूटि गयलन, भारत बाक अहो मझधार ।
मन की लालसा मन में रहि गयल, रहि रहि बेधत हियरवा बान
याको गिरजा नारायन पर, जो अस देखत कही न्याय ।
अच्छा मजाका बड सुन्दर भयो, को? बातिन का हरजा नाहि
कहना समझाना क्या मुझको, भाइन आखिरी सन्देश ।
कि भारत काज तुम्हारे सिर पर, रखिहो बीर हिंद की लाज ॥
नौकर चाकर नहि कोई मेरो, सब लोग भईया लागौ हमार ।
तासे तुमको समझावत हूं कि भईया करो देश का काम ।
धीरज शांति सत्य उर धरियो, हरदम करो राम का ध्यान ॥
हिंसा मत कीजिहो हाथ से, सिर फांसी पर देउ चढाय ।
तोप बारुदन के समुहे पर, सीधे छाती देउ अड़ाय ॥
जेहल भरदो सब दुश्मन का, लेकर नारायण का नाम ।
भारत माता की वेदी पर, भइया हो जाओ बलिदान ॥
पैर पिछाड़ ना कोइ धरियो, चाहे तन धजि धजि उड़ि जाय ॥
सत्याग्रह के समर क्षेत्र में, धरते रहो आगे पांव ।
अब विश्वास विजय का करिके, हटना ना भारती ज्वान ॥
काज हमारा यह होजइहो, [illegible] की यह [illegible] होइ जाय ।

औ यह विनय मोर कहि दीहौ, कि गांधी आज तुम्हारे हाथ।
इतना कहि के गांधी बाबा, और मोटर पर भयो सवार॥
इतना सुनया कुहरम लाग्यो, कि भारत फूटल नसीबा आजु।
आगु र मइया रे भारत वासी, गांधी आरत मिले अब नाहिं।
हल्ला होगयो भारत भर में, दर्शन हेतु जुड़ै संसार।
तब पग दीन्ह उतारि मोटर से, रेल डब्बा में दियो चढ़ाय।
इन्जन जोड़ दिया जल्दी से, लायो क़िला पुरन्दरपास॥
तुरतहिं दीन्ह उतारि वहां पर, औ लेगयो जेल के द्वार।
पसरेउ चांद्र हिंद का, तेहि में, लेकर चर्खा सुदर्शन हाथ॥
सौ रुपया मासिक तिन नौकर, देने लग्यो आप सरकार।
हाथ जोड़ि सब हाकिम बोले, होजा शांति आप महराज॥
तब गांधी बोलन लागे, सुन लो बात फिरंगी लाज।
हम शांति हैं सब दिलवा से पर देश शांति होइबे को नाहिं।
सबके खून खौली गयो हिंद में देखि देखि तोहरि न्याय अन्याय।
जब तक नहिं स्वतन्त्र सब होइहन, नहिं देहिया के जाय कुम्हलाय।
इतना कहिके गांधी बैठे, अपना करन गुजारा लागि।

## सिरोजनी नायडू की गिरिफ्तारी

### सवैया

सुन लिया जब हाकिम से, सब गयो जब जेल के द्वारे।
सून गोदाम को जुटन के हित, कोइ वीर जब नाहिं अखारे॥
सब हिंद क तर्क सरोजनी देखि, औ तब कारवाद सैनानी चाली
कि है करि [illegible] नाहिं, आज मेरे सेतु पर प्रान है॥

आल्हा

सतयुग में हिरणा कुश तपत्न, जिनने किया बहुत अन्याय।
ताको मारयो श्री भगवत जी, उनका गर्व दिया मिटवाय।
त्रेता में रावण असुर तपत्न, कि देवता बाँधि दुआरे लाय।
देखि न गया जब नारायण को, तो मारयो दिया गुल होजाय।
द्वापर में कंसासुर, दुर्योधन, करने लग्यो अधर्मी राज।
ताको बधन कियो भगवत जी, कौरव मारि कियो उरिहान।
प्रबल से प्रबल महा दुष्टन बधि, सारथि बन्यो भक्त के काज।
फिर कलियुग में गोरमेण्ट भयो, जिनकी जगजाहिर तलवार।
करन अधर्म लग्यो भारत पर, मच्यो चहुँ दिशि हाहाकार।
एक ओर बनिया गिड़ियानी थी, बिलपन लगी हिन्द की माय।
दुख की घटा घिरी भारत पर तब प्रभु आई लीन्ह अवतार।
गांधी प्रकट भयो दुनिया में, असहयोग खड्यन्त्र मचाय।
हो स्वतन्त्र सब भारतवासी, स्वतन्त्रता की हनिय निशान।
तामें हाथ देउ भयिया सब, अपना राखो देर लगाय।
जो ना साथ दिहो या समयापर, तो भयिया अन्त हाथ पछताई।
कोइ सुमिरनी अवधारो कउ, तनि सरोजिनी कउ सुनो हवाल।
जेहि के लेक्चर के सुनते में, बड़ बड़े बादशाह हिलिजाय।
जाके हाँक सुनत भारत में, हाकिम सबै गुम हो जाय।
बड़ बैठि थी सिंहासन पर, लेक्चर देत रहेयो तेहि काल।
कि खबरदार रहिहो बढ़िनी सब, है यह राज्य ब्रिटिश बयार।
तिनके जौहावन के खातिर, भारत कहत [illegible]।
[illegible]

कितने झूमल फाँसी चलि गये, कितने सड़त जेल दिन रात।
कुँवर, तिलक अरु देशबन्धु जी तजिगे टोपै लाजपति लाल।
राजेन्द्र, रामप्रसाद, रोशन सिंह, चढ़ि गइले मदन जतीन्द्र लाल
आज दिना भारत के खातिर, लीडर सबै जेल चलि जाय॥
सेनगुप्त विट्ठल सतीन्द्र अरु, गाँधी मोती जवाहिर लाल।
राघव नारी सैन अन्सारी, बल्लभ सत्यपाल सुभास॥
अस अस बीर मोर भारत के, सो चलि गये जेल के द्वार।
मर्द रहा सो जेहल चलि गये, केवल अब तिरिया रहि जाय॥
कहाँ चढ़ि गइजन रणखेतन में, देखे क्या करतो भगवान।
अब तो आस रही बहिनन पर, कि गाढ़े में आओ काम॥
आजु तिरियाँ आखीरी है, माता देखो नयन पसारि।
परिग बिपति आज भारत पर, नइया डूबति हिन्द की माय।
गाँधी बँध गयो जेलखाना में, छोड़ि बात भारतिन क्यार।
कि काज अधूरो मैं मोर छुटि गयो, देखै क्या करै हिन्द के लाल
सो हिजरा भयो भारत वासी, दिन रात करै गुलामी आजु।
हमैं लाजिमी अब बहिनी है, कि उनका कार्य करो यहि काजि
जागो जागो मेरि बहिन सब, अब बैठन की बेड़िया नाहिं॥
अब तक हो दुलहिन बैठि थी, पर अब करो देश का काज।
अकिले झाँसि की रानी ने, फिरंगिन के दाँत खटाइ॥
अकिले पद्मावती सती ने, घेरी थी अलाउद्दीन को जाई।
महिसासुर मारेउ जगदम्बा, हो कर रूप भवानी जाय।
अकसो लड़की जसवन्त सिंह की, रहिमाने को दीन पछाड़ि॥
कमला देवी औ जगदम्बा की, धावा करै गोदाम।
हो कर अंश सती सीता का और द्रोपदी का भरा जो खून॥

तिस पर सब सुखवरीती हो, बहिनी जीने को धिक्कार ।
मानुष देहिया यह दुर्लभ है, सब लोग सोच लेहु मन माहिं ॥
सात कोठरिया में नहिं बचिहौ, आखि दिन काल पहुँचो आय ।
पुत्र पति धन सब रहि जइहैं, बहिनों मानों कहा हमार ॥
इतना समुझावत लौ रहलो, तौलों गिरत गजबया के धार ।
तौलों मोटि पहुँचि नेतन की, हाथ जोरिके बोलन लागि ॥
कि तहयब पकड़ गयो माता जी, यह देह दिहलै ताज उतारि ।
कि यह पहिरहियो सिरोजनी को, और कह दिहो बात हमार ।
कि तहयब काज तुम्हारे सर पर, माता रखना लाज हमार ।
आखिरि नइया हिन्द की डोले, बेड़ा खेइ लगाओ पार ॥
चलहु चलहु माता जल्दी से, अब बातिन को बेरिया नाहिं ।
इतनी बतियां के अरसा में, सीरोजनी गइ मुरझाय ॥
कि हाय रे भारतीतोहिचाहि पड़िजा, औरगिर पड़े वजरकीघाव
बड़ बड़ लाल जेहलमें चलि गयो, कितने चढ़ि गइलन बलिदान
हाय विधि ब्रह्मा इका करले, कि भारत बगल अंधरिया आय
तब वालिन्टियर बोलन लागे, कि क्यों तुम मातु गई मुरझाय ॥
जो डर लागे तो घरमें रहि जा, नाहक काहे देर लगाय ।
इतनो सुनते पगलै होइ गइ, सीरोजनि अग्नि ज्वाल होइ जाय
तड़पी तबही सिंहासन पर, मानो टूट्यो बजर तेहि काल ।
गरज्यो माती तब चबूतरा पर, मेरी सुन लो कान लगाय ॥
इन्द्रासन ले लूं इन्द्र से, भोला से ले लूं कैलास ।
इस भारत में क्या रखा है, जिसको लेलू साँझ बिहान ॥
वीरमैंढ क्या कालमैंढ भी आवे समर खेत मैदान ।

तौभी था मैं नाहीं हटने को, जो तन धाजि धजि उड़ि जाय ।
हस्ती क्या है गवर्नमेंट की जो भारत को रखे गुलाम ॥
इतनी कहि के उठि ठाढ़ि भए, अपना बिगुल दीन्ह बजाय ।
कि असल सत्याग्रहि जो मैं हूंगा, तो गोदाम को लेऊं छुड़ाय ॥
जिसको चलना है मेरे संग, वह अब चलै हमारे साथ ।
यह कहि वं गाजिब चलि भए, पीछे गोल मेलवम क्यार ।
वाके पीछे झुराड सिरियन का, सब ही लिये तिरंगा हाथ ।
सब के तन पर खद्दर सोहे, ऊपरि कैप लहर दिखलाय
वन्दे मातु गांधी जय बोलत, मानो गूंज उठा असमान ॥
रंग रंगीले गाना गावत, झण्डन रही लालरी छाय ।
जेहि २ रस्ते चले सिरोजनी, धरती धहलि धहलि रहि जाय ॥
बिगुल बजावत ध्वजा उड़ावत, गर्जत जाति सिरोजनि साथ ।
अरे वंश होकर अर्जुन के, क्यों ना धरत अगाड़ि पांव ।
आदि दिनवा को जोहत थे, वीरो समय पहुँचत आय ॥
भागि भागि मत जइहौ कोई मुर्खा से, धीरो रखिहो धर्म हमार
नोकर चाकर नहिं कोई मेरा, सब लोग भइया लगें हमार ।
देश कार्य करना सबही को, केवल कार्य हमारा नाहिं ॥
तासे तुमको समझावत हूं, भइया करो देश का काम ।
भारतमाता दुख में रोये, गांधी जेहल में डिड़ियाय ॥
रोज रोज गइया डिड़ियाती, यों विधि जात जात हिन्दके लोक
कोतने लोहर जेलखाना में, भाई भाई कहि चिल्लात ।
कालति सोहरा डिम्डुगातीको, उगलन लगि चमिडेको चिल्कार ॥
एक दिन अइहा है अजिया मैं, [illegible] ॥

लाल कोठरिया में नहिं बन्धव, जा दिन काल पहुँची आय ॥
मन की बात मने रहि जइहन, भइया अन्त दाउ पछताय ॥
तासे सब को समुझाउत हुँ, वीर मानो बात हमार ॥
धन सम्पति कोई साथ जात नहिं, केवल धर्म साथ है जाय ॥
मानुष देही या यह दुर्लभ है, भइया जन्म न बारम्बार ॥
यदि आज्ञा चहि जाओ भारतवासी, मेरे प्यारे राजदुलार ॥
भारत माता को दुख हरिहौ, औ गाँधी की रखना लाज ॥
अटका नइया जो भारत की, ताको खेइ लगाओ पार ॥
अब तक हो निमर्द सोये थे, पर अब जगो भारती ज्वान ॥
मरना जीना है ईश्वर कर, पर यह समय तुम्हारे हाथ ॥
अब की बेरिया जो चूकि जइहौ, तो फिर खाक मिलैहौ लाज ॥
जागु जागु भइया रे भारतवासी, पे अब देहु बीर उठान ॥
दै दै पानी सब बीरन को, गंगाजीन तलवार सजाय ॥
अबलों तबलों के बखत में, दिन अरु राति बराबर जाय ॥
जाइ के पहुँचि गयीं कहि धुरेधर, दैवन बाँधि गयो [illegible] ॥
[illegible] गयो सब बीरन कऊ, [illegible] ॥
[illegible] आ गयो, पल्टन सबी सरोजिनी पधार ॥
सो सुपरिटेंडट पुलीस गारद लै, साथे [illegible] कोतवाल ॥
आकर घेर लियो ह[illegible] को, सोवत [illegible] सरोजिनी माई ॥
कि [illegible] पर [illegible], कैसे [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

तब आकर विनय कियो गांधी से, कि अबकी मदद देहु महराज
सीधे साधे गांधी, ज्ञाइ बिनु, दस लाख भेजे भारती जवान ॥
विजय दिखा दियो गौरमेंट को, औ सब चढ़ि गइलन बलिदान ॥
ताके बदला में हाकिम यह, देत स्वराज्य भारतिन क्यार ॥
आगे सुपरिण्टेंडेण्ट जी बढ़ि के, सरोजिनी से करे जवाब।
कि कहवाँ राना तोर औतन हैं, औ कहवां के नम्बरदार ॥
केकर रानी कहां तुम जइहौ, केहि हित सैन सजाइति आय ॥
तबहिं सरोजनि बोलन लागी, कि मानो बात फिरंगी राज ॥
हम रहवैया हैं भारत के, बगाले के नम्बरदार ॥
औ रानी हैं नायडू के, मेरा नाम सरोजिनी बाय ॥
सत्याग्रह मचलन भारत में, गांधी पकड़ लियो सरकार ॥
बाबा बोल्यो तब तैयब जी, वह भी गयो जेल के द्वार ॥
काज अधूरे में छुटि गइलन, ना लुटि गइलन नून गोदाम ॥
ताको लूटन के खातिर यह, आई सैन यहां पर आजु ॥
तब हीं बोले सुपरिण्टेण्डेण्ट जी, तुमै लौटि बंगाले जाउ ॥
तुम नहिं जानत गौरमेण्ट को, जिनसे भागी जर्मनी जाय ॥
कठिन सामना गौरमेण्ट का, जिनका उदय अस्त लौं राज्य ॥
काज कभी यह ना होइबे को, अब से लौटि जाउ महरानि ॥
तब सरोजनी जोर से बोली, मानो बात फिरंगी लाल ॥
ब्रिटिश छोड़ि हैं भारतवासी, इनको नहिं जानत महराज ॥
जब तक जियत रही बच्चा एक, करने ना दैं निष्कण्टक राज ॥
वीर जिन्ना दो कुंवर लाजपति, दे दो मदन जतीन्द्र नाथ ॥
औ औ बासी हिन्द के लालन, उनका बदला देउ चुकाय ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 634
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

ग्यारह शर्तें गांधी जी की, अबहीं मानि लेहु यहि काल ॥
कैद छाड़ि देहु सब बारम का, तौं हम लौटि बंगाले जाउ ॥
नहिं तो हम लौटन का नाहिं, चाहे तन धजि धजि उड़ि जाय ॥
इन्द्र भागि जा इन्द्रासन से, भोला छाड़ि भगैं कैलास ॥
पर यह पद नाहि त्रिभुवन को, जानो सत्य फिरंगीलाल ॥
तुमने जाना को गांधी एक, असहयोग के बीर कहाय ॥
पर तुम सोचु आजु मनवा में, कि भारत जगत आजु बरनाहि
जाहि राजा मे प्रजा दुखित हैं, वह क्या सुखी राज्य रहि जाय ॥
जो कोइ भारत है निर्बल को, ताको हनत आप करतार ॥
जो कृपा काहु को खनता है, ताको ईश्वर खनै भगाइ ॥
रावण कंसासुर बाणासुर, खोजि खोजि मारेउ निहत्थन कोय ॥
नाहक जेल दिया देवन का, औ तिरियन पर डारेउ हाथ ॥
तबहिं चक्र गिरा भगवत कउ, आइ कर मार कियो खरिहान ॥
अन्तिम राज जानु अपना अब, मन में सोच फिरंगीलाल ।
इतनी बात कहि सुरत में, चाह्यो सुपरिटेंडेंट महराज ।
कि कवनीसमइयामें धावाबालहु, तब हंसि बोली सरोजनीमाइ
कि जबहा ईश्वर आज्ञा दीहिन, तबहिं लूटीं नोन गोदाम ।
सुनि के बातें सब हाकिम ने, पहरा देन लगे तेहि काल ।
दर्शक बिछुरे थे पहनों पर, हवा लागि सब गांधन काय ।
लै लै शर्बत गुड़ मिठा, शीतल जल तथा पियावन हेतु ।
फूल से हरवा गुहि पहिरावत, तेहि को पुलिस मारन लागि ।
भूख के मारे औ पनिहा बिनु, तलफत लख्यो गांधिया लाल ।
सबदर्शक मिलि प्रभु कहँ सुमिरें, कि हे प्रभु पेतन न्यायवाडाह

बहुत अधर्म करत अब मुल्क पर, हाकिम तोर बुरा होइ जाय ॥
कलक्टर के करि माता रोवई, कि पकरि कस पहली सरकार ।
देखि अनीत बहुत हाकिम कर, गर्जन लागी सिरोजिनी माय ॥
आगो बाति केरि समया मैं, अबला विपुल रिपुन बतराइ ॥
कि छावा को तनु सब भस्म मिलि, कहाँ तुम्हारो नूर कोराम ॥
मैं हूँ बताओ भारत कह, उपजो जहाँ सीता सम नारि ॥
देखै कितना जोर हाकिम का, जो सजुहै पर आड़े पांव ॥
इतनी बात केरि सुनिबे में, लश्कर उठी भरहरा खाय ॥
बन्देमातु गाओ जय बोलत, जय जय जय सरोजनी माय
झण्डा छाइ गया बहुतां पर, दर्शक छूटि फरेउ फहराइ ॥
आगे आगे चली सरोजनी, डंका विजय बजावति जाय ॥
कौ हजारजों जत्था होगयो, गर्दा से सूर्य लुप्त होइजाय ॥
मारे हवा के खम्बा से, रस्सा चले पवन के साथ ॥
कितनों पुलिस पलटन डाकैं कितनहूँ डण्डन को मारि ॥
कितने घायल हो गिर पड़ते, मारत बन्दूकन को मारि ॥
पर नहिं कोई धीर मानत है, सबको गया क्रोध तन छाय
काछाकस लियो सब वीरनने, औ घुसि परेयो नूनगोदाम
लै लै बकरा सब नूनन का, फेंके बाहर के मैदान ॥
लोकि लोकि के सब जवानने, भौजल अपने लश्कर मांहि
छोड़े हिन्दी सुपरिंटेन्डेंट जो, साथे साहब औ कोतवाल ॥
वहँ किन्हि ज्यूर चुरै पुलिस कउ, अब्बा भुम्ब कहाँ समसाने
पर अखबार सरोजनी देखै, कोऊ कपल काम मर्याद ।
आदि दिन को सब आये हैं, मन के मेटि लेहु अरमान॥

मानुष देहिया यह दुर्लभ है, पाइब जन्म न बारम्बार ।
प्यारी बोलिया सुनै सरोजनी, औ ललकारि देत घमसान ।
छूटो छुटो मेरे भइया, अइसन समय न बा मझार ।
इतनि सुनत सब सैनिकन के, चारो दिशा गर्द होइ जाय ।
हल ना देख्या लगा गाड़ान पर, कोई काहू न पूछत बाय ।
सुन सवाल सब बीरन से, मन में खुशी जागरो बाय ।
कि डाइलन नाथ सुना सिरोजान का, बइसय देखो नयन पसार
जब तक जीहैं सिरोजनी माता, तब तक कौन करै परवाह ॥
अइसन काम की गांधी ना कइलन, उ कइ देली सरोजनी माय ।
पुलिस हारि गयो सगरी उ ब, सुपरिंटेण्ड जी दौड़े जाय ।
रट दिखा दियो सरोजनी को, कि तुम हित रंट दियो सरकार
झट दे सरोजनी स्वारी कर लियो, कुछ पालटियर औ चकराय
वन्देमातु गांधी जय बोलेउ, जय जय जय गांधी महराज ।
तुरत सवार भई मोटर पर, औ चलि भई जेल के द्वार ।
सब नेता मिलि आश्रम आगयो, अपना करन गुजारा लागि ।
ऐइसन काम सरोजनी किन्हा, नहिं कोई बीर आज संसार ।
नाम उजागर कियो माता जी धनि तुम धन्य सरोजनी माय ।
तुम्हरे सम माता कछु रहतिन, तो क्या डूबत हिन्द की नाव ।
घरी की घलिया यहि जग छोड़ा तनि आगे कछु सुनो हवाल ।
जबै सरोजनी गई जेहल में, हमरो कौन काम होइ जाय ।
रही हड़ताले भारत भर में, बन्द होइ गइली सबै दुकान ।
सब नेता मिलि सोचन लागे, कि हाथ चलि गइली सरोजनीमाय
तुम्हरे सम माता कछु रहतिन तो बनि जोत जेहका काम ।

---

वीर पतंगा करोड़ों करूं, जाकर मैंने दिया सुनाय
जो भूल चूक इसमें कछू, करिहा माफ भाइके भाइ
बुद्धि यहीन मतिमन्द बालक मैं, हैवै जारि भाँति समझाय
जैसा कहिहौ तस मानब हम, सबको शीश झुकावत दास
हमरी प्रार्थना सब आल्हा कर, जो कवि बाहर होवे कर्ता
भला गवाया सुफलेजिया कह, हाजिर करत हैं दस्तूर

---

आगे वर्णन शिव प्रसाद कह × वैद्य, मोती, मालवी, क
कृपा से विश्वनाथ प्रेसमें × निकला वीर, अवाहरलाल
जिसको लेकर के सेवामें × सबको बार पहुँचो दास

प्रिंटर—

रामचन्द्र सिंह

विश्वनाथ प्रेस, आजमगढ़

प्रथम बार १०००

१५ मार्च १९३१